शिक्षण साधन और बहुसंचार माध्यम

हीरालाल बाछोतिया*

वर्तमान युग संचार क्रांति का युग है। संचार के नये-नये माध्यम प्रचलित हुए हैं। परंपरागत शैक्षिक साधनों के साथ-साथ नवीन एवं विविध संचार माध्यमों का भी शिक्षण में यथोचित प्रयोग होना चाहिए। इससे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी और विद्यार्थी के लिए भी अधिगम सरल और रोचक होगा। प्रस्तुत लेख में संचार माध्यमों के शिक्षण में महत्त्व व उपयोग को ध्यान में रखते हुए संचार माध्यमों की जानकारी व संभावित उपयोग के बारे में बताया गया है।

हुआ यह है कि संचार माध्यमों ने लोगों को सूचना की ज़रूरत और उनके महत्त्व के प्रति सचेत कर दिया है। अब समाज में सूचना के लिए अधिक आग्रह है। सूचना की माँग भी अधिक है। लोग लिखे हुए शब्द के बजाय दृश्य पर अधिक भरोसा करते हैं। उसको महत्वपूर्ण समझते हैं। भाषा/साहित्य के शिक्षण में भी दृश्य-श्रव्य माध्यमों का महत्व बढ़ गया है। ज्ञानेंद्रियों को क्रियाशील रखने में दृश्य-श्रव्य माध्यमों का महत्त्व भी है। प्रत्यक्ष अनुभव के लिए दृश्य उपकरणों की आवश्यकता होती है। इनकी सहायता से पाठ्य-सामग्री को सरस तथा सरल बनाया जा सकता है। विषय को भी रोचक और बोधगम्य बनाया जा सकता है। इससे स्वयं सीखने की प्रेरणा मिलती है। इससे अर्थ ग्रहण में भी सहायता मिलती है। इससे शब्द भंडार में पर्याप्त वृद्धि होती है। दृश्य उपकरणों में श्याम पट्ट (ब्लैक बोर्ड) सबसे अधिक प्रचलित है। ब्लैक बोर्ड का प्रयोग रेखाचित्र, चित्र, मानचित्र, ग्राफ आदि के लिए किया जा सकता है। शब्दों की वर्तनी समझाने जैसा काम भी ब्लैक बोर्ड की मदद से बखूबी किया जाता है। यह शिक्षक के पास सब से आसान और विश्वसनीय साधन है। इसी के साथ फेल्ट बोर्ड, चार्ट, चित्र, फ्लैश कार्ड भी दृश्य उपकरणों में आते हैं। किताब या मुद्रित

*के 40, एफ साकेत, नयी दिल्ली 100017

शब्द को समझाने, उसका विश्लेषण करने आदि का काम शताब्दियों तक शिक्षा-जगत ने इसी की सहायता से किया है। अब दृश्य-श्रव्य माध्यमों के आ जाने से स्थिति में कुछ परिवर्तन आया है। लेकिन ऐसा नहीं है कि दृश्य-श्रव्य माध्यमों ने इन्हें बेदखल कर दिया है। खासकर चित्रों का महत्त्व यथावत बना हुआ है। सभी आयु वर्ग के शिक्षार्थी इसमें रुचि लेते हैं। चित्रों का प्रयोग प्रभावशाली होता है इसीलिए पुस्तक से लेकर अखबार, विज्ञापन आदि में चित्र की अहम् भूमिका होती है। चित्र और शब्दों का साथ-साथ प्रयोग और भी प्रभावशाली होता है। चित्र में दिखाई गई वस्तुएँ विभिन्न संस्कृतियों में विभिन्न अर्थ का संप्रेषण करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति चित्र को अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार समझता है। यही कारण है कि सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए चित्रों का विशेष महत्त्व है। जब हम अन्य भाषा-द्वितीय अथवा तृतीय के रूप में, किसी विदेशी को सिखाते हैं तो भाषिक पक्ष के साथ सांस्कृतिक पक्ष भी किसी-न-किसी रूप में उपस्थित होता है। स्थिति-परक पाठ्यसामग्री का तो आधार ही चित्र होता है।

जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेज़ी भाषा सिखाने की पुस्तकें तो रेखाचित्रों तथा चित्रों से भरी होती हैं। इधर केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने मलयालम्, कन्नड़, तेलुगु सिखाने के लिए जो पुस्तकें नागरी लिपि के माध्यम से प्रकाशित की हैं, उनमें चित्रों को समुचित स्थान दिया गया है। विशेष रूप से लक्ष्य भाषा के सर्वनामों का जितना व्यतिरेकी विवेचन इन पुस्तकों में चित्रों द्वारा स्पष्ट किया गया है यह सब बिना चित्रों द्वारा संभव ही नहीं होता। ये सब अयांत्रिक शिक्षक साधन हैं। आगे हम यांत्रिक और नये इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण साधनों की चर्चा करेंगे।

अन्य दृश्य माध्यम

अन्य दृश्य माध्यमों में प्रक्षेपक (प्रोजेक्टर) ओवर हेड प्रक्षेपक, स्लाइड प्रक्षेपक, अपारदर्शी प्रक्षेपक, चित्र-पट्टी आदि भी शामिल हैं। प्रक्षेपक से रेखाचित्र, मूकचित्र आदि को दिखाया जा सकता है। इसकी सहायता से कोई भी पारदर्शी दिखाई जा सकती है। इसकी उपयोगिता यह है कि शिक्षक पारदर्शियाँ दिखाते हुए निरंतर कक्षा से मुखातिब रहता है तथा पारदर्शी(ट्रांसपेरेन्सी)में दिए बिंदुओं पर चर्चा आदि जारी रख सकता है। व्याकरणिक सारणियों या भाषिक बिंदुओं को पहले से पारदर्शियों पर लिखा या टाइप किया जा सकता है, कक्षा में उनके प्रदर्शन द्वारा उन पर जीवंत चर्चा की जा सकती है।

स्लाइड प्रक्षेपक की सहायता से सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले चित्रों, चार्टों आदि को दिखाया जा सकता है। इसी प्रकार ओपेक प्रोजेक्टर या ''इपिडाइस्कोप'' द्वारा किसी पुस्तक के पृष्ठ या पाठ्य-सामग्री को पर्दे पर दिखाया जा सकता है।

इन दृश्य साधनों के उपयोग तथा निर्माण का प्रशिक्षण पहले डी.टी.ए. (एन.सी.ई.आर.टी.) में दिया जाता था जो अब केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) (एन.सी.ई.आर.टी.) में परिवर्तित कर दिया गया है।

चित्र-पट्टियाँ फोटोग्राफ़ी से तैयार की जाती हैं। भाषा शिक्षण में इसकी विशेष उपयोगिता है। काल, पक्ष, प्रयोग, मिश्र वाक्यों का प्रयोग इन पट्टियों के द्वारा सिखाया जा सकता है। भिन्न भाषा कौशलों को सिखाने के लिए एक ही फ़िल्म स्ट्रिप्स का प्रयोग बार-बार किया जा सकता है। जो भाषा सिखाई जा रही है उस भाषिक समाज की पृष्ठभूमि इन फ़िल्म स्ट्रिप्स में प्रदर्शित की जाती है जिससे अन्य भाषा शिक्षण में पर्याप्त मदद मिलती है।

श्रव्य माध्यम से भाषा की ध्वनियाँ, स्वर्नित प्रक्रिया, बलाघात आदि को सीखा या सिखाया जा सकता है। इस दृष्टि से रिकॉड्र्स, टेपरिकॉर्डर तथा रेडियो का सर्वाधिक महत्त्व है।

लिंग्वा रिकॉर्ड

लिंग्वा रिकॉर्ड को डिस्क रिकॉर्ड भी कहते हैं। लिंग्वा पद्धति पर "हिंदी-लिंग्वा रिकॉर्ड" का निर्माण केंद्रीय हिंदी निदेशालय (भारत सरकार) द्वारा किया गया है। ये रिकॉर्ड पत्राचार के माध्यम से हिंदी पाठ्य-सामग्री के रूप में तैयार किये गए हैं। इनको एक प्रकार से पाठ्य-सामग्री का पूरक कह सकते हैं।

हिंदीतर भाषा - भाषियों और विदेशियों को हिंदी भाषा का शुद्ध उच्चारण और उसकी वाक्य संरचना तथा व्यावहारिक हिंदी सीखने में सहायता प्रदान करने के लिए रिकार्डों के सेट तैयार किये गए हैं। सेट के पहले चार रिकॉर्ड ध्वनि और उच्चारण से संबंधित हैं। दूसरे सेट के आठ रिकॉर्डों में आधारभूत व्याकरणिक नमूनों का विश्लेषण किया गया है। तीसरे सेट के चार रिकॉर्डों के अंतर्गत आठ पाठों में विभिन्न परिस्थितियों और वातावरण से संबंधित सामान्य बातचीत का नमूना प्रस्तुत किया गया है।

टेप रिकॉर्डर

कैसेट रिकॉर्डर भाषा शिक्षण का व्यावहारिक माध्यम है। इसके माध्यम से उच्चारण, अभ्यास, शुद्ध उच्चारण के प्रति अभ्यस्त बना या बनाया जा सकता है। ध्वनियों के प्रत्यक्ष शिक्षण की दृष्टि से इसका आज भी बहुत महत्व है।

इस प्रकार के दो ट्रैक के कैसेट रिकॉर्डर भी हैं जिनमें शिक्षार्थी मॉडल को सुनकर दुहराता हुआ रिकॉर्ड कर सकता है और बाद में मॉडल से अपने रिकॉर्डिंग की तुलना कर सकता और अपनी गलती का स्वयं सुधार कर सकता है। लगभग यही प्रक्रिया भाषा-प्रयोगशाला में भी होती है।

रेडियो

रेडियो श्रव्य माध्यमों में सर्वप्रमुख है। भाषा शिक्षण में रेडियो का विशेष स्थान है। रेडियो कार्यक्रम साहित्य/भाषा शिक्षण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इतना ही नहीं नाटकों में "साउंड इफ़ेक्ट्स" ने इस श्रव्य माध्यम को कई गुना प्रभावशाली बना दिया है। इस दृष्टि से रेडियो तकनीक ने अनेक संभावनाएँ उपस्थित कर दी हैं। रेडियो प्रसारण के अनेक लाभ हैं। इनमें प्रमुख हैं—

1. रेडियो बोलचाल की भाषा का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है जिसको भाषा शिक्षण के लिए अपनाया जा सकता है।

2. देश के किसी भी कोने में रह रहे श्रोता को रेडियो के माध्यम से सिखाया या पढ़ाया जा सकता है।
3. रेडियो पर अच्छे शिक्षकों / लेखकों / भाषाविदों की सेवाओं का उपयोग किया जा सकता है या किया जाता है जिससे श्रोता को आधिकारिक जानकारी आदि उपलब्ध होती है।
4. रेडियो अन्य साधनों से सस्ता तथा सर्वसुलभ है।

आज रेडियो के माध्यम से अनेक प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। सर्वजन संप्रेषण के माध्यमों में रेडियो अग्रगण्य है। ट्रांज़िस्टरों की बाढ़ ने रेडियो की उपयोगिता में चार चाँद लगा दिये हैं।

भाषा शिक्षण की दृष्टि से रेडियो पर प्रसारित पाठों का बहुत महत्त्व है। इसमें शिक्षक, भाषाविद्, लेखक, उद्घोषक सभी की मिली-जुली भूमिका होती है। रेडियो द्वारा प्रसारित पाठों का कक्षा में भी उपयोग किया जा सकता है। सी.आई.ई.टी. (एन.सी.ई.आर.टी) ने कुछ समय पहले राजस्थान में रेडियो से हिंदी पढ़ाने का ऐसा बड़ा प्रयोग किया था जिसमें स्कूलों को रेडियो सेट भी उपलब्ध कराये गए थे।

रेडियो पर प्रसारित पाठों को टेप करके भी रखा जा सकता है। इस प्रकार इस उपयोगी सामग्री को जब चाहें तब सुन सकते हैं। रेडियो कार्यक्रम द्वारा श्रवण माध्यम से भाषा कौशलों का दृढ़ीकरण होता है और उनकी अभिवृद्धि भी। यह रेडियो की ही विशेषता है।

स्वतंत्रता के बाद से आकाशवाणी ने शैक्षिक कार्यक्रम के माध्यम से हिंदी पाठों का भी प्रसारण शुरू किया। वह 1969 का वर्ष था जब हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को पढ़ाने के लिए आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारण शुरू हुआ। लखनऊ से तमिल, भोपाल से मलयालम, पटना से तेलुगु, जयपुर से कन्नड़, के पाठों को सिखाने के लिए भी पाठों का प्रसारण शुरू हुआ। जैसे राँची से पंजाबी, तेलुगु तथा तमिल, लखनऊ से बांग्ला, दिल्ली से तमिल तथा बांग्ला का प्रसारण होने लगा। दक्षिण के केंद्रों हैदराबाद व बेंगलुरु से हिंदी तथा पड़ोस की भाषाओं का प्रसारण शुरू हुआ। इसमें एक भाषा के पाठों का प्रसारण 4 से 6 माह तक चलता था; सप्ताह में लगभग पाँच पाठ प्रसारित किए जाते थे और अवधि 15 मिनट रखी जाती थी। अनेक केंद्रों खासकर दिल्ली से आज भी यह प्रसारण होता है। यह ज़रूर है कि पूर्व-प्रसारित पाठ ही पुनः प्रसारित किये जाते हैं। इस प्रकार भारत जैसे विशाल देश में रेडियो के माध्यम से भाषा शिक्षण की अपूर्व संभावनाएँ हैं।

फिल्में और हिंदी शिक्षण - सिनेमा का भाषा शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान है। फ़िल्म की सहायता से भाषा-शिक्षण विधिवत् किया जा रहा है। तथापि सिनेमा के माध्यम से भाषा का परोक्ष रूप से पर्याप्त शिक्षण हो रहा है। हिंदीतर क्षेत्रों में फ़िल्म के माध्यम से हिंदी का जितना प्रचार-प्रसार हो रहा है, अन्य विधि से नहीं।

भाषा विषयक फ़िल्मों के प्रदर्शन से भाषा के शुद्ध प्रयोग का अभ्यास संभव है। फ़िल्म से

जहाँ ज्ञान की वृद्धि होती है वहीं अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है। अनजाने ही शिक्षार्थी या दर्शक के भाषा कौशलों, बोलने तथा सुनने में निखार आ जाता है। भाषिक विशेषताएँ विशेषकर नाद सौंदर्य, बलाघात, सुर आदि शिक्षार्थी के मानस पटल पर स्थायी रूप से अंकित हो जाते हैं। इसी प्रकार भाषा की मुहावरेदानी तथा चुटीले संवाद दर्शक पर सीधे प्रभाव डालते हैं। फ़िल्म में एक साथ चित्र, गति, रंग तथा ध्वनि का समन्वित रूप सबको बाँध लेता है।

फ़िल्म के माध्यम से जो भाषा सिखाई जाती है उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी स्पष्ट रूप से उभारी या प्रस्तुत की जाती है। विशेष रूप से अन्य भाषा के रूप में हिंदी या कोई भी भाषा सीखने वाले के लिए साहित्य/संस्कृति की समझ पैदा करने में फ़िल्म का अमिट योगदान है।

लिपि सिखाने के लिए भी फ़िल्म का उपयोग किया जाता है, "देवनागरी लिपि" शिक्षण पर भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, साहित्य अकादमी, एन.सी.ई.आर.टी. आदि ने फ़िल्मों का निर्माण किया है। इसी प्रकार हिंदी के अति महत्वपूर्ण लेखकों, कवियों पर एन.सी.ई.आर.टी. ने अब तक इक्कीस फिल्मों का निर्माण किया है। इनमें नागार्जुन, हरिशंकर परसाई, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि पर बनाई गई फ़िल्में प्रमुख हैं।

भाषा शिक्षण और टेलीविज़न

भाषा में "स्थितिपरक" तैयार पाठ्य-सामग्री को जितनी सुगमता से टेलीविज़न के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है, अन्य किसी विधि से नहीं। ख़ासकर द्वितीय भाषा शिक्षण में इस माध्यम का उपयोग सर्वाधिक प्रभावशाली समझा जाता है।

इसके माध्यम से ही सी.सी.टी.वी. (क्लोज्ड सर्किट टी.वी) प्रविधि को अपनाया जा सकता है। यह नवीनतम साधन है जिसका इस्तेमाल शिक्षण/प्रशिक्षण में किया जा रहा है। भाषा शिक्षण में भी इसका विशेष रूप से प्रयोग गति पकड़ रहा है। इसके माध्यम से कई प्रकार के भाषा कौशलों को समन्वित रूप से पढ़ा या पढ़ाया जा सकता है। वीडियो के माध्यम से तो इसे बार-बार दिखाया भी जा सकता है। सी.सी.टी.वी. की उपयोगिता तब ही होगी जब एक साथ पाठ कई कक्षाओं में पढ़ाया जाये। सीखने की क्रिया को प्रभावी के साथ ही सरल रखने की दृष्टि से यह पद्धति सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

जबसे वी.सी.आर./सी.डी. प्लेयर आये हैं, दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखने की समय की पाबंदी खत्म हो गई है। अब टी.वी. के मन पसंद या उपयोगी कार्यक्रम को रिकॉर्ड कर सी.डी. प्लेयर की मदद से जब चाहें देख सकते हैं। विभिन्न संस्थाओं जैसे इग्नू (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय), एन.सी.ई.आर.टी., सी.आई.एल., सी.आई.आई.ई.एल., साहित्य अकादमी, ओपन स्कूल आदि के द्वारा निर्मित भाषा/साहित्य संबंधी फिल्मों, ख़ासकर वीडियो फिल्मों को सी.डी. प्लेयर द्वारा जब चाहे देखा या दिखाया जा सकता है। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रसारित ''ज्ञान दर्शन'' कार्यक्रम का भी लाभ उठाया जा सकता है।

भाषा/साहित्य शिक्षण, प्रशिक्षण संबंधी दृश्य-श्रव्य फ़िल्में पूरक सामग्री का ही काम कर सकती हैं। ये उपकरण शिक्षक की सहायता के लिए हैं। ये साधन एकांगी हैं। इन साधनों से शिक्षार्थी की सारी जिज्ञासाओं का समाधान नहीं हो सकता। अध्यापक ही वह जीता-जागता श्रव्य-दृश्य साधन है जिसका विकल्प नहीं है।

कंप्यूटर का भाषा शिक्षण में उपयोग

मुद्रित साहित्य एक प्रकार से माध्यम (मीडिया) से हमारा पहला साक्षात्कार था। अब साहित्य प्रिंट मीडिया को छोड़कर दृश्य-श्रव्य अर्थात टी.वी. पर आ गया है। यह एक बड़ा परिवर्तन है। इस परिवर्तन के द्वारा पुराना नष्ट नहीं हुआ है, उसमें पुनः उत्पादन हुआ है। रेमंड विलियम के अनुसार 'हमारे समय में संचार का अर्थ जनसंचार ही है, वे मनुष्य के विकास में बने हैं।' टी.वी. की संचार प्रविधि साहित्य को उसी तरह अपने अनुकूल बनाती है या बदलती है जिस तरह प्रिंट मीडिया ने कभी साहित्य को बदला था। मीडिया साहित्य को उसकी निजता, स्थानीयता और वैचारिकता से मुक्त कर सार्वजनिक बनाता है। हर वह अनुभव जो दूसरे तक संप्रेषित होना चाहता है, मीडिया पर निर्भर हो जाता है। माध्यम ने साहित्य का एक उत्तर-यथार्थवादी, उत्तर आधुनिक युग शुरू कर दिया है। ख़ासकर ऐसे समय में जब कागज़ महँगा किया जा रहा है जिससे पुस्तक महँगी हो रही है। उधर रेडियो टेलीविज़न सस्ते किए जा रहे हैं।

कंप्यूटर, मोबाइल, फ़ैक्स जैसे नये इलेक्ट्रानिक माध्यम जनसंचार के अत्याधुनिक साधन हैं। सूचना क्रांति का सीधा संबंध कंप्यूटर से जुड़ा है। पर्सनल कंप्यूटर के आ जाने से द्विभाषी, त्रिभाषी पैकेज उपलब्ध होने लगे हैं। इससे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों और पांडुलिपियों का संग्रह किया जा सकता है। अनेक प्रतिष्ठानों द्वारा शब्दकोशों का निर्माण किया गया है जो बटन दबाते ही अर्थ का उद्घाटन कर देते हैं। कंप्यूटर साहित्य/भाषा शिक्षण में भी अहम् भूमिका निभा रहा है। ख़ासकर शिक्षक-प्रशिक्षण के लिए तैयार की गई सी.डी., कंप्यूटर के माध्यम से कहीं भी दिखाई जा सकती है। योग्यतम अनुभवी शिक्षकों की सेवाएं प्रशिक्षण कार्यक्रम की सी.डी. बनाने के लिए प्राप्त की जा सकती हैं। इस सी.डी. से अनेक प्रतियाँ तैयार की जा सकती हैं और कंप्यूटर पर दिखाई जा सकती हैं। यह प्रदर्शन शिक्षार्थियों को किसी विद्वान या अनुभवी शिक्षक से सीधे संपर्क में मदद करेगा। इसी प्रकार किसी भी भाषिक/साहित्यिक विषय पर कंप्यूटर की मदद से कार्यक्रम तैयार किया जा सकता है। प्रशिक्षण के दौरान इसका प्रदर्शन कर संकल्पनाओं को स्पष्ट करने में सहायता मिल सकती है। इसकी विशेषता यही है कि दृश्य-श्रव्य के साथ इसमें लिखित संदेश पढ़कर अवधारणाओं को दृढ़ीभूत किया जा सकता है।

आज समाज में बदलाव के कारण शिक्षा से भी यही माँग की जा रही है। यह ज़रूर है कि कंप्यूटर कभी शिक्षक का स्थान नहीं ले सकता किंतु यह भी हकीकत है कि इसने शिक्षक की भूमिका बदल दी है। अतिप्रतिभावान तथा पिछड़े दोनों तरह के छात्रों पर कंप्यूटर की मदद से

ध्यान दिया जा सकता है। शिक्षण विधियों में कंप्यूटर का प्रयोग अब एक शर्त बन गई है। कुछ बिंदु इस प्रकार हैं–

नई सूचना तकनीकें

विधियों, संसाधनों के कारण जो कुछ नया उभर रहा है, उसका उपयोग बहु-संचार माध्यमों में चित्र, विषय-वस्तु तथा आवाज़ के एक साथ प्रदर्शन से संवादात्मक रूप में यह सब करना संभव हो गया है।

टेलीमैटिक्स

इसके द्वारा टेली कम्युनिकेशन तथा सूचना प्रौद्योगिकी का शैक्षिक परिवेश में एकीकरण कर दिया गया है।

अन्य नई तकनीकें

सूचना प्रौद्योगिकी की उपयुक्त सामग्री जिसका शिक्षा/शिक्षण में उपयोग हो सके, की पहचान कर उसका उपयोग करना इसकी विशेषता है।

टेलीमिक्स का काम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंप्यूटर नेटवर्क को जोड़ना है। यह कम लागत का विकल्प है। ट्रेनिंग कोर्स का वितरण करने की दृष्टि से भी यह उपयुक्त माध्यम है। ब्रिटेन में मुक्त विश्वविद्यालय इसके माध्यम से दूर शिक्षा उपलब्ध करा रहे हैं। दूर-शिक्षा के लिए इंटरेक्टिव मीडिया ने घर बैठे शिक्षा उपलब्ध कराने में सफलता प्राप्त की है। इसके माध्यम से जीवनपर्यंत शिक्षा (लांग लाइफ एजुकेशन) की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। इसके कारण शिक्षक की भूमिका मात्र मार्गदर्शक और सहायक (फ़ेसिलीटेटर) की रह गई है । भविष्य में शिक्षक के लिए लाज़िमी होगा कि वह वैयक्तिक ध्यान अधिक दे। शिक्षक को विद्यालयों में अनेक जिम्मेदारियाँ ओढ़नी होंगी। उसे अपने विषय के अलावा भी शिक्षार्थियों की दूसरी तरह की मदद करनी होगी। इस हेतु शिक्षक को सेवाकालीन या पुनर्नवीकरण प्रशिक्षण देना होगा तथा बताना होगा कि उसकी भूमिका में परिवर्तन आ रहा है।

भाषा/साहित्य शिक्षण

इक्कीसवीं शताब्दी, जिसका एक दशक बीत रहा है, में वैज्ञानिक और तकनीकी उत्कर्ष और विकास अधिक मूर्त हो रहा है। अंतरिक्ष की अपार संभावनाएँ, परमाणु ऊर्जा, चिप प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी कंप्यूटर आदि में नये आयाम उद्घाटित हो रहे हैं। लगता है इक्कीसवीं शताब्दी में ज्ञान ही राजा होगा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन इसके सिपहसालार होंगे। जनसंख्या वृद्धि के कारण अनेकानेक सामाजिक बदलावों से रूबरू होना पड़ेगा। अत: चुनौतियों का सामना पूर्ण मानव संसाधन विकास के द्वारा ही संभव है। ऊर्जा, जिज्ञासा, काम करने की क्षमता तथा राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवहार के साँचों के प्रति जागृति की अनिवार्यता सबके लिए ज़रूरी उपकरण होंगे। मानव संसाधन से आशय है अभिवृत्ति, अभिरूचि, मानव मूल्य और भाषा तथा साहित्य । युवाओं खासकर शिक्षार्थियों से अधिक क्षमता की अपेक्षा होगी। अधुनातन ज्ञान,

आवश्यक कौशलों के विकास से ही ऐसी क्षमता का विकास हो सकेगा। वास्तविकतावादी शिक्षा (Holistic Education) ही नई शिक्षा होगी।

इस नई दिशा में विषय-वस्तु, शैली और माध्यम के बदलाव से नई पीढ़ी बदलते सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक वातावरण से अनुकूलन करने में समर्थ हो सकेगा। इस तरह सही काम के लिए सही व्यक्ति का प्रशिक्षण संभव हो सकेगा, मानव संस्थान का ताना-बाना पढ़ने वाला समाज उत्पन्न करेगा। इसके लिए जीवनपर्यंत शिक्षा ही आधार होगी। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षण-प्रशिक्षण का महत्व अपने-आप सिद्ध होता है। ये संस्थान वर्तमान में समाज की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे हैं। वर्तमान परिस्थितियों के चलते वे भविष्य की चुनौतियों को कैसे झेल सकेंगे? लोगों में इस तरह की चेतना के निर्माण में इग्नू, इसरा, एन. सी.ई.आर.टी. ने कुछ काम किया है, किंतु वह नाकाफ़ी है। अन्य संस्थानों को भी यह दायित्व निभाना होगा।

इधर हमारे देश में शिक्षण के लिए विशाल ढाँचा तैयार किया जा रहा है। देश में भाषा/साहित्य शिक्षण तथा अन्य विषयों के शिक्षण के लिए 1995 से एकलमार्गी वीडियो तथा द्विमार्गी श्रव्य अंतरिक्ष चैनल शुरू किया गया था। इनका राष्ट्रव्यापी लाभ शिक्षा विभागों, विश्वविद्यालयों द्वारा उठाया गया था। इनसेट (INSAT) के शुरू हो जाने पर छह राज्यों में शैक्षिक टी.वी (ETV) कार्यक्रम शुरू किये गए थे। उधर यू.जी.सी. ने भी उच्च शिक्षा के लिए कार्यक्रम शुरू किये थे। इग्नू ने भी राष्ट्रीय नेटवर्क पर आधा घंटे का कार्यक्रम शुरू किया था। सन् 2000 से इग्नू ने ज्ञान दर्शन नामक शैक्षिक चैनल शुरू किया है। अब ज्ञान दर्शन के चार चैनल कार्य करते हैं। ये हैं जी.डी.चैनल, दूर शिक्षा का संवादात्मक चैनल, एकलव्य प्रौद्योगिकी चैनल और ज्ञान भारती चैनल। इसके साथ ही ज्ञान वाणी एफ़.एम. रेडियो चैनल भी काम कर रहा है। इस सबसे कितना लाभ हो रहा, इसका आकलन किया जाना चाहिए तथा जहाँ ज़रूरी हो परिष्कार या पनुर्विचार करना चाहिए। प्रो. मनमोहन चौधरी के अनुसार इसरो (इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन) ने एजुकेशनल टेलीविज़न शुरू किया है जो भारत जैसे गरीब देश के लिए हाई-फ़ाई प्रौद्योगिकी है। वे सवाल करते हैं कि क्या यह वंचित स्कूलों की ज़रूरत है या इसरो की? (नेशनल कंसल्टेशन ऑन एडूसेट पृ. 64) उन्होंने यह भी टिप्पणी की है कि एडूसेट के कार्यक्रमों में रोचकता का अभाव है। अत: वे दर्शक शिक्षार्थी को आकर्षित नहीं कर पाते। स्कूल स्तर पर शैक्षिक टेलीविज़न का उपयोग नहीं किया जाता। "टर्निंग प्वाइंट" जैसा कार्यक्रम ज़रूर लोकप्रिय हुआ क्योंकि वह राष्ट्रीय चैनल पर आता था न कि शैक्षिक टेलीविज़न पर। इन सबके मद्देनज़र शिक्षण के बहु-संचार माध्यमों की ज़मीनी हकीकत तथा प्रभावशीलता का आकलन किया जाना चाहिए तथा उनमें सुधार आदि को लेकर पुनर्विचार करना चाहिए।

भविष्य में प्राइमरी से लेकर उच्च शिक्षा के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए कई तरह के उपकरणों की अपेक्षा होगी। इन उपकरणों में

वीडियो-कांफ्रेंसिंग, श्रव्य कांफ्रेंसिंग, कंप्यूटर नेटवर्किंग डीवीडी/एलसीडी आदि का समावेश होगा। ये उपकरण केंद्रीय स्तर पर अपेक्षित हैं। इससे टेलीफ़ोन और इंटरनेट के ज़रिए इंटरनेट ऑडियो-इंटर कनेक्टिविटी ऑन लाइन प्रशिक्षण दिया जाना संभव हो सकेगा। इसके लिए यथोचित स्तर का सॉफ्टवेयर विकसित करना होगा जो उपयोगकर्त्ता में रचनात्मकता भी उत्पन्न कर सके। इग्नू, यू.जी.सी. आदि को इसके लिए तैयार किया जाना चाहिए।

शिक्षा में कंप्यूटर के अनुप्रयोग न सिर्फ भारत में वरन् दुनिया भर में हो रहे हैं। विकसित देशों के अनुभव से भी हम लाभ उठा सकते हैं। प्राथमिक शिक्षा में कंप्यूटर का प्रयोग अमेरिका और केनेडा में सन् 1982 से हो रहा है। इनके सेकेंडरी स्कूलों में भी 1982 से ही कंप्यूटर का प्रयोग हो रहा है। उनका अनुभव है कि शिक्षार्थी स्कूलों में कंप्यूटर का कम इस्तेमाल करते हैं। जबकि घरों में इसका इस्तेमाल 60% होता है। स्कूलों में भाषा शिक्षण में 20% से अधिक कंप्यूटर का उपयोग नहीं किया गया है। उनका यह भी कहना है कि ज़्यादातर स्कूलों में कंप्यूटर एक शिक्षण साधन से ज्यादा नहीं माना गया है।

स्टेट स्कूल्स न्यूयॉर्क सिटी के स्कूलों में भी सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर सुविधाओं में खासा अंतर देखा गया। विषय वस्तुएं तथा संगठन में इससे कोई भारी बदलाव नहीं आया है। इसका बड़ा कारण शिक्षक ही है।

इस प्रकार बहुसंचार माध्यम (मल्टी मीडिया) अत्यंत महँगा विकल्प है पर इसे तैयार करने वाले बाज़ार के अभाव में अधिक कुछ नहीं कर पाते।